



पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12

अंक : 11

जुलाई, 2025

मूल्य : ₹2.00

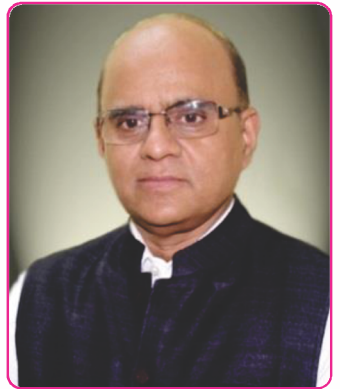


मार्गदर्शन : कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित

कुलगुरु सन्देश

जुनोटिक रोगों की रोकथाम हेतु एक स्वास्थ्य परिकल्पना आवश्यक: कुलगुरु

पशुधन में भारत अत्यधिक समृद्ध देश है जहां लाखों पशुधन व मुर्गियां हैं। पशुधन देश की अर्थ व्यवस्था तथा मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। मनुष्य के विकास में पशुओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, मनुष्य ने भोजन, परिवहन, कृषि, सुरक्षा, युद्ध और मनोरंजन जैसी गतिविधियों के लिए पशुओं को पालना शुरू किया था, इसके परिणाम स्वरूप पशुओं व मनुष्यों का सम्पर्क बढ़ा व आवास साझा किये, जिससे पशुओं से मनुष्यों में एवं मनुष्य से पशुओं में बीमारियों का संक्रमण होना शुरू हो गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वे रोग जो मनुष्यों व पशुओं के बीच फैलते हैं जुनोटिक (प्राणीरुज्जा) रोग कहलाते हैं। जुनोटिक रोग विश्वभर में एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है। अनुमान है कि वैश्विक स्तर पर हर साल जुनोटिक बीमारियों के एक बिलियन मामले आते हैं तथा लाखों की मृत्यु होती है। वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 60 प्रतिशत संक्रमण जुनोटिक है। पिछले तीन दशकों में 30 से अधिक उभरती बीमारियां जुनोटिक रोग ही हैं, जिसमें 75 प्रतिशत संक्रमण पशुओं से ही उत्पन्न हुए हैं। रिफ्ट वैली फीवर, सार्स, इन्फ्लुएन्जा, वेस्ट नाइल फीवर, कोरोना इत्यादि प्रमुख जुनोटिक रोग हैं, जिनका संक्रमण हाल ही में देखने को मिला है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्व जुनोटिक दिवस 6 जुलाई को मनाया जायेगा। जुनोटिक रोगों के प्रति जागरूकता फैलाने तथा मनुष्य व पशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों व बीमारियों को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर चिंतन करने के लिए मनाया जाता है। फ्रेंच केमिस्ट व माइक्रोबायोलोजिस्ट लुई पाश्चर ने 6 जुलाई 1885 को रेबीज जैसी जुनोटिक बीमारी के विरुद्ध पहले टीके का सफल प्रयोग किया था। इस कारण यह दिवस जुनोटिक बीमारियों के विरुद्ध पहले टीकाकरण के दिन 6 जुलाई को मनाया जाता है। जुनोटिक रोग का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य को होने वाली समस्याओं के अलावा मनुष्य के रोजमर्रा के जीवन पर महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक प्रभाव पड़ता है। दिन-प्रतिदिन जुनोटिक रोगों का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है। वैश्वीकरण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, पेड़ों की कटाई, प्रदूषण, शहरी माइक्रो-क्लाइमेट और वन्यजीव आवासों पर मानव का अतिक्रमण आदि प्रमुख कारणों से जुनोटिक रोगों का संक्रमण बढ़ता ही जा रहा है। इन जुनोटिक रोगों की रोकथाम हेतु एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण के बीच परस्पर सम्बन्ध पर जोर देता है, ताकि इन बीमारियों के उद्भव को रोका जा सके तथा नियंत्रण किया जा सके। मानव व पशु स्वास्थ्य क्षेत्रों के बीच प्रभावी सहयोग जुनोटिक रोगों की रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार भविष्य की महामारियों को रोकने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की भी आवश्यकता है, जिसमें एक स्वास्थ्य परिकल्पना के साथ-साथ बेहतर निगरानी, त्वरित प्रतिक्रिया, क्षमता विकास, वैश्विक स्तर पर बेहतर संचार व समन्वय की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इन रोगों को एकता, टीमवर्क तथा पारदर्शिता के माध्यम से ही रोका जा सकता है। विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों के द्वारा जुनोटिक रोगों की रोकथाम हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर पशुपालकों व किसानों को जागरूक किया जा रहा है।



आचार्य मनोज दीक्षित

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी





विश्वविद्यालय समाचार

वैटरनरी विश्वविद्यालय में मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय एवं ऊर्जा थिएटर सोसायटी, बीकानेर के संयुक्त तत्वाधान में वैटरनरी यूनिवर्सिटी ऑडिटोरियम में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अमृता यात्रा के अंतर्गत नाटक अमर अमृता का मंचन किया गया। नाटक में पर्यावरण के लिए अमृता देवी के लिए ऐतिहासिक बलिदान को प्रस्तुत किया गया। नाटक में दिखाया गया कि किस प्रकार खेजड़ी के पेड़ों को काटने से बचने के लिए अमृता देवी उनकी तीन पुत्रियों सहित 363 लोगों में अपने प्राणों की आहुति दी। इस अवसर पर कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण मानव व पशु संरक्षण से जुड़ा हुआ है अतः पर्यावरण की विचार धारा को जीवन का सिद्धांत मानकर कार्यशील होना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के संदेश का नाटक या अन्य माध्यमों से जन-जन तक पहुंचाकर जागृति उत्पन्न करनी चाहिए ताकि भविष्य की पीढ़ियों को वर्तमान प्राकृतिक सम्पदाओं को देखने का मौका मिल सके। कार्यक्रम के दौरान धन्यवाद ज्ञापन कार्यकारी अधिष्ठाता प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने किया एवं मंच संचालन डॉ. नीरज शर्मा ने किया। इस नाटक का नाट्य रूपांतरण वरिष्ठ रंगकर्मी अशोक जोशी द्वारा किया गया एवं इसका निर्देशन रंगकर्मी सुरेश पूनिया ने किया। नाटक में शिप्रा, प्रिया आर्य, आकांक्षा पुरोहित, अक्षिता जोशी, प्रियांशु सोनी, नील माधव, गणेश छंगानी, सिद्धार्थ कुल्हारिया, सात्विक तंवर, राहुल माधव, उदय सिंह भाटी, रवि शर्मा, अदनान खान, सिमी सत्यानी, जय खत्री, कृष्णा, नावेद भारती, अनिल बंधाडा, गौरव मोयल, रोहित शर्मा, मिलन के अभिनय ने सभी को प्रेरित किया। इस अवसर पर वैटरनरी महाविद्यालय परिसर में कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अधिष्ठाता डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय प्रो. राहुल सिंह पाल, परीक्षा नियंत्रक प्रो. मनीषा माथुर, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. पंकज कुमार थानवी, शैक्षणिक, अशैक्षणिक, स्टाफ, विद्यार्थी सहित आमजन भी उपस्थित रहे।



राजुवास का इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी ने विकसित किया 3डी प्रिंटेड मॉडल पारम्परिक बैलगाड़ी की संरचना के तकनीकी सुधार पर मिला पेटेंट

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने 5 जून को इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी सेंटर फॉर एनिमल साइंस, बीकानेर का निरीक्षण किया। इस अवसर पर कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने केंद्र द्वारा विकसित 3डी प्रिंटेड मॉडल्स का अवलोकन किया, जिन्हें पशु चिकित्सा विज्ञान में अध्ययनरत विद्यार्थियों को पशु शारीरिक संरचना (एनाटॉमी) और पशु शल्य चिकित्सा (सर्जरी) की प्रायोगिक ज्ञान देने के लिए कारकस (पशु शरीर) के स्थान पर प्रयोग में लिया जा सकेगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित ये मॉडल्स आने वाले समय में पारंपरिक पशु शवों के स्थान पर शिक्षण में एक सशक्त विकल्प साबित होंगे। इस अवसर पर कार्यक्रम के दौरान निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया निदेशक क्लिनिकल प्रो. प्रवीण बिश्नोई, केंद्र के प्रभारी डॉ. दिवाकर चौधरी उपस्थित रहे।

वैटरनरी विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी केंद्र द्वारा पारंपरिक बैलगाड़ी की संरचना में तकनीकी सुधार से संबंधित डिजाइन को पेटेंट कार्यालय भारत सरकार द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया। यह डिजाइन केंद्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. दिवाकर चौधरी एवं डॉ. अशोक डांगी द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है। इस नए डिजाइन में बैलों को केवल भार खींचना होता है, जबकि भार वहन का कार्य शॉकर एवं टायर मैकेनिज्म द्वारा संपन्न होता है। इस संरचनात्मक परिवर्तन के कारण न केवल बैलों की शारीरिक थकावट में कमी आएगी, बल्कि पारंपरिक बैलगाड़ियों में प्रायः देखी जाने वाली गर्दन संबंधी समस्याओं से भी बचाव हो जाएगा। कुलगुरु आचार्य मनोज दीक्षित ने पेटेंट प्राप्ति हेतु संबंधित सभी अधिकारियों को बधाई दी। पेटेंट डिजाइन प्रदर्शन के दौरान निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया निदेशक क्लिनिकल प्रो. प्रवीण बिश्नोई, केंद्र के प्रभारी डॉ. दिवाकर चौधरी, डॉ. अशोक डांगी, डॉ. अभिषेक गुप्ता, डॉ. जावेद अखतर उपस्थित रहे।



वैटरनरी विश्वविद्यालय ने मनाया 11वां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर ने 21 जून को ग्यारहवां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। जिला प्रशासन, बीकानेर द्वारा योग दिवस डॉ. करणी सिंह स्टेडियम, बीकानेर में "एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर वैटरनरी विश्वविद्यालय के डीन-डायरेक्टर, शिक्षक कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने डॉ. करणी सिंह स्टेडियम में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शामिल हुए और विभिन्न योग मुद्राओं के साथ योगाभ्यास किया।





गांव गड़ियाला (कोलायत) में जागरूकता शिविर का आयोजन

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर के पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 5 जून को जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। केंद्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. मोहन लाल चौधरी ने बताया कि पशुपालकों को पर्यावरण संरक्षण पर पुस्तिका का वितरण किया गया एवं पशुपालकों को पशुस्वास्थ्य हेतु खनिज लवण मिश्रण वितरित किया गया। कार्यक्रम में 38 पशुपालक उपस्थित रहे। जागरूकता कार्यक्रम नरसीराम गुर्जर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पशुधन निरीक्षक राजवीर सिंह गड़ियाला, सरपंच रामेश्वर लाल भूतड़ा, मुकेश कुमार गुर्जर, मूलसिंह, लाला राजपुरोहित, रणवीर सिंह, टीकू राम मेघवाल और अन्य स्टाफ का भी सहयोग रहा।



यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी

गांव कतरियासर में जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा गोद लिए गांव कतरियासर में दिनांक 26 जून को जल संरक्षण अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कृषि विभाग, बीकानेर के सहायक कृषि अधिकारी रमेश भामू द्वारा किसानों को विभिन्न सिंचाई जल संरक्षण की तकनीकों, वर्षा जल संरक्षण तकनीकी तथा इनसे संबंधित राजस्थान सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यक्रम में यूएसआर समन्वयक डॉ. सुनील कुमार, सहायक आचार्य, डेयरी विज्ञान प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर ने उन्नत बीज तथा इन क्षेत्रों में उपयुक्त फसल की किस्मों को लगाने बाबत जानकारी दी ताकि कम पानी में अच्छी पैदावार किसानों को मिल सके। कार्यक्रम में अन्य विभिन्न मुद्दों जैसे वर्षा ऋतु में ओरण क्षेत्र में वृक्षारोपण, चारागाह विकास आदि पर भी चर्चा की गई ताकि ग्रामीणों में जागरूकता पैदा की जा सके तथा इनका समुचित विकास किया जा सके। कार्यक्रम के दौरान ग्राम सरपंच संतोष देवी, उपसरपंच केशुनाथ तथा अन्य ग्रामीणों का सहयोग रहा।



जोरजी का खेड़ा में जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, (उदयपुर) द्वारा विश्वविद्यालय सामाजिक दायित्व के तहत अंगीकृत गांव जोरजी का खेड़ा में दिनांक 30 जून को जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अभियान का उद्देश्य ग्रामीणों को जल की महत्ता, जल संरक्षण के विभिन्न उपाय, घरेलू जल उपयोग में सावधानी, जल संकट की चुनौतियां तथा जल के संरक्षण हेतु व्यवहारिक उपायों के प्रति जागरूक करना था। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के समन्वयक डॉ. टीकम चंद गोयल, सहायक आचार्य के साथ डॉ. अभिषेक गौरव, डा. महेन्द्र मील एवं डॉ. ममता कुमारी का सहयोग रहा।



गांव खतेपुरा में जल संरक्षण जागरूकता अभियान

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.), जयपुर द्वारा दिनांक 18.06.2025 को विश्वविद्यालय सामाजिक दायित्व के तहत गोद लिये गांव खतेपुरा में जल संरक्षण जागरूकता अभियान चलाया गया। संस्थान के विश्वविद्यालय सामाजिक दायित्व समन्वयक डॉ. संजय कुमार रेवानी, सहायक आचार्य तथा पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों डॉ. योगेश कुमार, डॉ. अमन आर्या तथा डॉ. प्रवीण कुमार जाटव ने घर-घर जाकर ग्रामवासियों को जल संरक्षण के महत्व एवं विभिन्न उपायों के बारे में समझाते हुए उन्हें जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया। वर्षा जल संचयन के विभिन्न उपायों, कृषि के लिए ड्रिप सिंचाई तथा मलचिंग विधियों का उपयोग, जल स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाना तथा पानी के दुरुपयोग को रोकने आदि के बारे में जानकारी प्रदान कर उन्हें जागरूक किया गया। स्थानीय सरपंच प्रतिनिधि श्री दीपक कुमार मीणा ने इस अभियान में महत्वपूर्ण सहयोग किया।



रामपुरावास में जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम

यूनिवर्सिटी-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बरसी (जयपुर) द्वारा गोद लिये गांव रामपुरावास में दिनांक 25 जून को जल संरक्षण पर जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. नरेन्द्र कुमार सहायक आचार्य एवं डॉ. महेन्द्र कुमार, डॉ. खुशाल सौलकी, शिक्षण सहयोगी, डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बरसी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में ग्रामीणों को जल की बर्बादी को रोकने, वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देने तथा सिंचाई में आधुनिक जल बचत तकनीकों को अपनाने पर जोर दिया।





पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु) द्वारा दिनांक 25, 26 एवं 27 जून को गांव मेलूसर, दाउदसर एवं दस्सूसर गांवों में तथा दिनांक 3, 4, 6, 10 एवं 11 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 275 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा दिनांक 27 जून को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 30 जून को गांव 232 आरडी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 59 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा दिनांक 4, 10 एवं 13 जून को गांव लुआरी, सांडा एवं टांडा गांवों में तथा दिनांक 24, 25, 26 एवं 28 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 250 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा दिनांक 4, 5, 11, 12, 16 एवं 17 जून को केन्द्र परिसर में अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा दिनांक 28 जून को गांव बेरापुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 28 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 19 एवं 28 जून को गांव बावडी एवं जाईतरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 65 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा दिनांक 3, 4, 7, 10 एवं 11 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 125 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा दिनांक 12, 13, 16, 17 एवं 18 जून को गांव रूपाहेली, बागड़ी, हाथगी, सिंदोलिया एवं बीड़ गनवर गांवों में तथा दिनांक 24, 25 एवं 27 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 375 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा दिनांक 26 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 25 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 16-19, 20-23, 23-25 एवं 25-28 जून को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 108 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





अमृत तुल्य है: बकरी का दूध



बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो कि कम लागत, साधारण आवास, रख-रखाव तथा पालन पोषण के साथ किया जा सकता है। बकरी की छोटी साईज और आसान प्रबंधन में इसे विशेषकर सीमांत एवं लघु किसानों द्वारा लोकप्रियता के साथ अपनाया जा रहा है। कम देखभाल के बावजूद भी किसान बकरी पालन से अच्छा मुनाफा हासिल करते हैं। लघु बकरी पालन करने के लिए पशुपालक को अलग से किसी स्थान की आवश्यकता नहीं पड़ती उन्हें वो अपने घर पर ही आसानी से रख सकते हैं। बड़े पैमाने पर यदि बकरी पालन का कार्य किया जाए तब उसके लिए अलग से एवं व्यवस्थित तरीके से पशुशाला बनाने की जरूरत पड़ती है।

अधिकांशतः लोग गाय या भैंस का दूध पसंद करते हैं, लेकिन बकरी का दूध अच्छी सेहत और तंदुरुस्ती के लिए मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत ही उपयोगी है। बकरी का दूध पोषण देने के साथ-साथ कई तरह की शारीरिक व मानसिक समस्याओं में भी राहत देता है। बकरी का दूध कई महत्वपूर्ण पोषक तत्वों की खान माना जाता है। इसके दूध में फैट कम मात्रा में होता है और सभी आयु वर्ग के लिए इसका सेवन सुरक्षित माना जाता है। बकरी के दूध में विटामिन, मिनरल्स और प्रोटीन जैसे फायदेमंद पोषक तत्व मौजूद होते हैं। इसके दूध में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, शुगर, सोडियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, विटामिन-ए और विटामिन-बी जैसे पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में होते हैं। बकरी का दूध केवल सेहत को ही नहीं वरन् सौन्दर्य को भी कई तरह के फायदे पहुंचाने में सक्षम है। बकरी का दूध प्रीबायोटिक और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है और इसमें लिनोलिक एसिड, सेलेनियम, नियासिन, विटामिन-ए, प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम, सोडियम, जिंक और मिनरल जैसे कई पोषक तत्व पाये जाते हैं।

बकरी का दूध है अमृत तुल्य : हमारे बड़े बुजुर्गों की कहावत रही है कि पहला सुख निरोगी काया। वैसे तो कोरोना महामारी ने शरीर की फिटनेस के बारे में लोगों को और जागरूक कर दिया है। यही वजह है कि अब लोग अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए किसी भी तरह के उपाय करने से पीछे नहीं हट रहे हैं, उनमें से कई लोग अब गाय-भैंस के दूध के साथ-साथ बकरी का दूध भी पीने लगे हैं। बकरी का दूध मानव के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद है।

बकरी के दूध में पाये जाने वाले प्रोटीन का पाचन आसानी से होता है तथा इसमें लेक्टोज भी कम होता है अतः यह पेट को स्वस्थ रखने में सहायता करता है। बकरी के दूध में कैल्शियम, मैग्नीशियम व फॉस्फोरस की मात्रा अधिक होती है जो कि हड्डियों को स्वस्थ व मजबूत बनाने में सहायता करती है। साथ ही इसमें लिनोलिक अम्ल पाया जाता है, जो कि मस्तिष्क के विकास को बढ़ाता है। बकरी के दूध में एंटीऑक्सीडेंट गुण पाया जाता है जो कि स्वस्थ



त्वचा के लिए बहुत ही आवश्यक है और विटामिन-ए व बी भी होते हैं जो कि बालों को झड़ने से रोकता है और इसमें आयरन भी कुछ मात्रा में पाया जाता है, जिससे एनीमिया से भी बचा जा सकता है।

हृदय हमारे शरीर के सबसे अहम अंग में से एक है इसे स्वस्थ रखने पर हम बड़े जोखिम से बच सकते हैं। बकरी के दूध में मैग्नीशियम की अच्छी मात्रा पायी जाती है जो हृदय के लिए विशेष रूप से फायदेमंद माना जाता है। मैग्नीशियम हृदय की धड़कन को संतुलित बनाए रखने में मददगार होता है। इसके साथ ही इसमें कॉलेस्ट्रॉल की मात्रा भी कम होती है जिस कारण यह हृदय और धमनियों के लिए फायदेमंद होता है। बकरी का दूध पीने वाले व्यक्ति का ब्लड प्रेशर भी नियंत्रित रहता है क्योंकि इसमें पोटेशियम का स्तर काफी ज्यादा होता है जो बी.पी को कम या ज्यादा होने से रोकता है। साथ ही रक्त में प्लेटलेट की संख्या को बढ़ाने में बकरी का दूध काफी सहायता करता है। डेंगू और चिकनगुनिया होने की स्थिति में गिरती हुई प्लेटलेट को बढ़ाने के लिए बकरी के दूध का सेवन करना काफी फायदेमंद होता है। इसके दूध में सेलेनियम तत्व पाया जाता है जो प्लेटलेट की संख्या बढ़ाने में मदद करता है। गर्भावस्थाओं में महिलाओं में कब्ज की समस्या को दूर करता है क्योंकि इसमें प्रीबायोटिक, ओलिगोसेकेराइड्स की मात्रा अधिक होती है जो कि कब्ज को दूर करने में सहायता करता है। बकरी का दूध सीरम इन्सुलीन लेवल को कम करता है इसलिए डायबिटीज की समस्या में लाभकारी होता है। इन सभी गुणों के साथ बकरी के दूध में एंटीकैंसर गुण होता है क्योंकि इसमें संयुग्मित लिनोलिक अम्ल का स्तर उच्च होता है जोकि एंटीकैंसर गुण रखता है। बकरी के दूध में इतने गुण होने के कारण एवं मानव स्वास्थ्य में बकरी के दूध की उपयोगिता को देखते हुए ही इसे अमृततुल्य कहा जाता है और इसी कारण लोग अब गाय-भैंस के दूध के साथ-साथ बकरी का दूध भी उपयोग में लेने लगे हैं।

डॉ. अतुलशंकर अरोड़ा

प्रभारी अधिकारी, पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा



पशुओं में गलघोटू रोग: कारण व बचाव

गलघोटू एक घातक जीवाणु जनित संक्रामक रोग है जो मुख्यतः गाय या भैंसों में मानसून के मौसम में होती है। यह रोग भेड़, बकरियों और सुअरों को भी प्रभावित करती है। इस रोग का अत्यधिक प्रकोप मानसून मौसम में ही होता है, जब नमी व कीचड़ जीवाणु के प्रसार को बढ़ाते हैं, जिससे पशुओं की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है एवं मृत्यु दर अधिक हो जाती है। यह रोग विशेषकर 6 माह से 2 वर्ष के आयु के युवा पशुओं में पाया जाता है तथा यह रोग भारत सहित दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में पशुपालकों के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। इस रोग की रोकथाम के लिए मानसून शुरू होने से पहले ही टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए।

रोग का कारण :

- ❖ पशुओं में यह रोग प्रायः पाश्चुरेला मल्टोसिडा के संक्रमण से होता है।
- ❖ बारिश व आर्द्रता में यह रोग तेजी से फैलता है।
- ❖ यह जीवाणु अधिक नमी वाले मौसम में सक्रिय होता है और यह 2 से 3 सप्ताह तक संक्रमित मिट्टी एवं घास में सक्रिय रह सकता है।
- ❖ यह रोग मुख्य रूप से गाय और भैंसों को प्रभावित करता है विशेषकर भैंसों अधिक संवेदनशील होती है।

रोग का प्रसार :

- ❖ संक्रमित पशुओं की नाक की लार, मूत्र व मल के सम्पर्क में आने से।
- ❖ दूषित जल, चारा, बाड़ा, उपकरण से।
- ❖ पशुओं से सीधा संपर्क, पशु मेले, भीड़-भाड़ व अस्वच्छता से रोग का विस्तार।

रोग के लक्षण :

- ❖ इस रोग में पशुओं को शुरू में तेज बुखार 106 से 107 डिग्री फारहेनहाइट हो जाता है।
- ❖ पशु को श्वास लेने में कठिनाई।
- ❖ गले और गर्दन में सूजन (जो श्वास नली को दबाती है), जिससे पशु घुटता है। इसलिए इसे गलघोटू कहा जाता है।
- ❖ नाक से झागदार स्त्राव निकलना।
- ❖ लार टपकना।
- ❖ कमजोरी व भूख में कमी।
- ❖ यदि उपचार समय पर न हो तो पशु की मृत्यु कुछ ही घंटों में या 1-2 दिन में हो सकती है।

उपचार :

- ❖ रोग की स्थिति में तत्काल पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें।
- ❖ प्रभावित पशुओं को अन्य पशु से अलग करें।
- ❖ सल्फाडिमिडी ओक्सीट्रेट्रासाईक्लीन एवं क्लोरामफेनीकोल जैसी एंटीबायोटिक का उपयोग इस रोग के खिलाफ कारगर उपचार है।

रोकथाम व नियंत्रण :

- ❖ इस रोग से बचाव करने के लिए पशुओं का टीकाकरण एक मात्र उपाय है जो वर्षा ऋतु या मानसून से 2 महीने पहले (मई एवं जून) में लगा देना चाहिए।
- ❖ एक बार टीकाकरण से पशुओं में 6 महीने से 1 साल तक प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न हो जाती है।
- ❖ टीकाकरण की पहली खुराक 6 महीने की आयु के पशुओं को तथा बूस्टर खुराक प्रथम टीकाकरण के 6 महीने बाद और पुनः टीकाकरण-वार्षिक।
- ❖ पशु आवास को साफ-सुथरा रखें। पशु के आस-पास गंदगी न रखें और न ही उन्हें सड़ा-गला चारा खिलाएँ।
- ❖ रोग प्रभावित क्षेत्रों में वाहनों एवं पशुओं की आवाजाही रोक देना चाहिए।

**“टीका लगाओं, गलघोटू से पशुओं को बचाओं”
समय पर सुरक्षा ही सबसे बड़ी दवा है।**

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

कृषि शिक्षा के साथ पशुपालन को दिया व्यवसाय का रूप

श्री विजय पुत्र श्री भैरुशंकर गुर्जर उम्र- 27 वर्ष, शिक्षा-स्नातक कृषि के साथ-साथ पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाकर सामाजिक व आर्थिक स्तर मजबूत कर दिखाया। हम बात कर रहे हैं कोटा जिले के गांव-रामखेड़ली, तहसील लाड़पुरा के पशुपालक की जो अपनी मेहनत से सफलता की ओर अग्रसर हैं। विजय गुर्जर के पास 20 बीघा कृषि भूमि होने के बावजूद न केवल पशुपालन को अपनाया अपितु एक सफल पशुपालक बना। पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा रामखेड़ली गांव में समय-समय पर पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जाते रहे हैं। प्रशिक्षण शिविर के दौरान श्री विजय गुर्जर अन्य पशुपालकों के साथ केन्द्र के सम्पर्क में आये। इन्होंने कृषि के साथ पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाया। ये पशुपालन को और भी वृहद् स्तर पर करने हेतु प्रयासरत हैं। वर्तमान में इनके पास 15 भैंसें मुरा नस्ल, 07 गायें जो कि हॉलस्टीन क्रॉस व 12 वत्स हैं। इनके यहां प्रतिदिन 140 से 150 लीटर दूध उत्पादन होता है। इससे इनकी वार्षिक आय 10 लाख रुपये तक हो जाती है। उपभोक्ताओं को सफ़ाई करने वाले व्यक्ति सीधे ही इनके डेयरी फॉर्म से दूध खरीद लेते हैं साथ ही ग्रामवासी भी इनसे दूध खरीद लेते हैं जिससे इनको दूध बेचने के लिए अलग से प्रयास नहीं करना पड़ता। इस कार्य के लिए दो स्थानीय लोगों को रोजगार भी दे रखा है। विजय गुर्जर अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को अधिक महत्व देते हैं। साथ ही भैंसों में प्राकृतिक परिसेवा हेतु अपने डेयरी फॉर्म पर उन्नत नस्ल का सांड भी रखा हुआ है। गायों में केवल कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को ही ज्यादा महत्व देते हैं। निकट भविष्य में सेक्सड सीमन एवं भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक को भी अपनाने की इच्छा रखते हैं। पशुओं के लिए चारा अपने खेत से पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। इनके पास इलेक्ट्रीक चॉफ कटर भी है। पशुओं के लिए प्राथमिक उपचार बॉक्स स्वयं रखते हैं एवं जरूरत पड़ने पर पशुचिकित्सक की सेंवाएँ भी लेते हैं। प्रशिक्षण के दौरान इन्होंने कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण ग्याभिन पशुओं की देखभाल, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, भूसे को यूरिया उपचारित करने का ज्ञान, सन्तुलित पशु आहार एवं अजोला आदि की जानकारी प्राप्त की है। पशुपालन की उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर इन्होंने क्षेत्र में अपनी एक अलग ही पहचान बनायी है। कृषि एवं पशुपालन से घर-परिवार एक खुशहाल जीवन जी रहे हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा इनको समय-समय पर पूरा सहयोग किया जाता है। विजय गुर्जर अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के साथ-साथ पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा को भी देते हैं।



सम्पर्क : श्री विजय गुर्जर
ग्राम-रामखेड़ली, तह. लाड़पुरा, कोटा (मो.7568540680)



मानसून में पशुओं में होने वाली प्रमुख बीमारियां व रोकथाम

पशुधन भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार है यह न केवल सकल घरेलू उत्पाद में योगदान देना है ताकि ग्रामीण आबादी के लिए आजीविका और खाद्य सुरक्षा का प्रमुख स्रोत है। पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए उनके स्वास्थ्य तथा पोषण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। शरद व ग्रीष्म ऋतु की भांति वर्षा ऋतु में भी पशुओं के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्षा ऋतु का मौसम अपने साथ हरियाली, वातावरण में नमी के साथ कई रोगों को भी लेकर आता है। बरसात के पानी में भीगने के साथ ही पानी के एक जगह एकत्रित होने से भी पशुओं के रोग हो जाते हैं। एकत्र हुए पानी में कई जीवाणु पनपते हैं तथा पशुओं में रोग का कारण बनते हैं। इसके लिए पशुओं की उचित देखभाल जरूरी होती है। अतः मानसून में भी पशुओं को रोगों से बचाने के लिए विशेष प्रबंधन पर ध्यान देना चाहिए इस मौसम में पशुओं में होने वाले प्रमुख संक्रामक रोग जैसे गलघोटू, लगड़ा बुखार, न्यूमोनिया, परजीवी रोग प्रमुख हैं इन रोगों के लक्षणों व सामान्य उपचार की जानकारीयां पशुपालक को होना आवश्यक है।

- 1. गलघोटू :-** गलघोटू जीवाणुओं से होने वाला एक घातक रोग है जो गाय, भैंस, भेड़, बकरी व शूकर प्रजाति का प्रमुख रोग है इसमें पशु को उच्च ताप (106-107 डिग्री), श्वास की कठिनाई, आंखें लाल व सूजी हुई न्यूमोनिया व गर्दन के आस-पास सूजन इसके प्रमुख लक्षण हैं। इस रोग में उपयुक्त चिकित्सा नहीं मिलने पर पशु की मृत्यु भी हो जाती है। रोग की स्थिति में तत्काल पशु चिकित्सक से सम्पर्क कर उपचार करवाना चाहिए व प्रभावित पशुओं को अन्य पशुओं से अलग रखें। हर बार मानसून में पशु का टीकाकरण करवाना चाहिए व स्वस्थ पशुओं को चारा, दाना, पानी अन्य रोगी पशुओं के अलग देना चाहिए।
- 2. लगड़ा बुखार (फडसूजन) :-** यह भी एक जीवाणु जनित रोग है यह मुख्य रूप से गाय व भैंसों में होता है लेकिन भेड़ व बकरियों में भी हो सकता है। वर्षा ऋतु में इस बीमारी में ज्यादातर मामले सामने आते हैं इस रोग को लंगडिया रोग, जहर वाद एक टंगा रोग आदि नामों से जाना जाता है। इस रोग में 6 महीने से 2 वर्ष तक के पशु सर्वाधिक प्रभावित होते हैं तथा मृत्युदर भी अधिक होती है। इस रोग से प्रभावित पशुओं में तेज बुखार, आंखें लाल, पैरों में कड़ापन, मांसपेशियों में सूजन आ जाती है। मांसपेशियों के बीच हवा के कारण दबाने पर चड़चड़ाहट की आवाज आती है व प्रभावित पशु अचानक लगड़ा कर चलता है। संक्रमित पशु का तुरन्त पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए तथा बचाव के लिए टीका भी उपलब्ध है बरसात से पहले लगड़ा बुखार का टीका पशुओं में अवश्यक लगवा लेना चाहिए।
- 3. खुरपका-मुंहपका रोग :-** यह विषाणुओं से होने वाला प्रमुख रोग है। यह मुख्य रूप से सर्दियों में होने वाला रोग है परन्तु आजकल मानसून में भी इसका संक्रमण मिलने लगा है। यह मुख्यतः विभक्त खुर वाले पशुओं का अत्यन्त संक्रामक रोग है। इस रोग में पशु के मुंह से लार गिरना, जीभ, मसुड़ों, खूर, अयन आदि पर छाले पड़ जाते हैं, खुरों में घाव होने पर कीड़े भी पड़ जाते हैं। यह एक छुत की बीमारी है अतः संक्रमित व स्वस्थ पशुओं को एक दूसरे से अलग-अलग रखना चाहिए तथा संक्रमित पशु का पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए। भारत सरकार के सहयोग से चलाये जा रहे (FMDCP)

खुरपका मुंहपका रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत पशुओं के वर्ष में दो बार टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए।

- 4. बोवाइन रेस्पिरेटरी डीजीज :-** यह एक सांस की बीमारी है जो बछड़ी, बछड़े सहित बड़े पशुओं को प्रभावित करती है। यह रोग जीवाणु व विषाणु के कारण हो सकती है। बरसात में भीगने पर अथवा बढ़ी हुई आर्द्रता व नमी के कारण ये जीवाणु व विषाणु रोग फैलाते हैं। इस रोग से प्रभावित पशुओं में खांसी, बुखार व सांस में कठिनाई हो सकती है। संक्रमित पशुओं में अन्य पशुओं से अलग कर पशुचिकित्सक से उचित उपचार करवाना चाहिए।
- 5. फड़किया रोग :-** फड़किया स्वस्थ भेड़ व बकरियों में होने वाली प्रमुख बीमारी है जो मुख्य रूप से जुलाई-अगस्त में होती है। यह एक जीवाणु जनित रोग है इस रोग में पेट में दर्द, आफरा व मांसपेशियों में खिचाव व दस्तों का होना प्रमुख लक्षण है। इस रोग से मुख्य रूप से रेवड़ व सबसे स्वस्थ पशु सबसे पहले प्रभावित होता है। पशु शाम को चर कर आते हैं तथा सुबह पशु की अचानक मृत्यु हो जाती है। इस रोग से ग्रसित पशुओं का तुरन्त पशुचिकित्सक से उपचार करवायें व स्वस्थ पशुओं को प्रोटीन युक्त चारा कम मात्रा में खिलायें व ताजा फसल कटाई के बाद पशुओं को अधिक समय के लिए खेतों में चरने नहीं देना चाहिए।
- 6. परजीवी संक्रमण :-** बरसात के मौसम में टिक्स, जूं और चीचड़ जैसे परजीवियों की संख्या बढ़ जाती है। यह परजीवी बछड़े, बछड़ियों तथा बड़े पशुओं में समस्या पैदा करते हैं तथा कई रोग जैसे बबेसियोसिस, थिलिरियोसिस व एनाप्लाज्योसिस आदि रोगों को फैलाते भी हैं। इनटिक्स, माइट व चीचड़ों के कारण पशु के वजन का घटना, खून की कमी होना, चिड़चिड़ापन आदि लक्षण आते हैं। पशुओं को चिचड़टिक्स से बचाने के लिए नियमित रूप से पशुओं को नहलायें, पशुशाला में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें तथा समय पर पशुओं को कृमिनाशक दवा देनी चाहिए।

उपरोक्त बीमारियों के साथ-साथ पशुपालकों को वर्षा ऋतु में निम्न बातों का भी ध्यान रखना चाहिए।

- ❖ वर्षा से पहले पशुशाला की छत आदि की मरम्मत कर लेनी चाहिए ताकि छत पर पानी एकत्रित न हो।
- ❖ पशुशाला की खिड़कियां खुली रखें तथा गर्मी व उमस से बचने के लिए पंखों का उपयोग करें।
- ❖ पशुशाला की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें तथा पानी एकत्रित न होने दें ताकि मच्छर व परजीवी का संक्रमण रोका जा सके।
- ❖ पशुशाला से मल मूत्र निकासी का भी ध्यान रखें
- ❖ पशुशाला के आस-पास कचारा व गंदगी एकत्रित न होने दें तथा निकासी की उचित व्यवस्था रखनी चाहिए।
- ❖ बारिश में पशुओं को गड्ढे व जोहड़ में एकत्रित पानी नहीं पिलावें। पशुओं को स्वच्छ व साफ जल ही पिलावें।
- ❖ दाने का भंडारण भी नमी रहित जगह पर करना चाहिए।
- ❖ मानसून शुरू होने से पहले पशुओं का टीकाकरण अवश्य करवा लेना चाहिए।

डॉ. राजेश सिगाठियां, डॉ. मनोहर सैन एवं डॉ. सीताराम गुप्ता
वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर



मानसून में मुर्गियों का विशेष ध्यान रखे मुर्गीपालक



मुर्गी पालन एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है जो मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र में आय, रोजगार सृजन और खाद्य सुरक्षा में योगदान करती है। आज मुर्गी पालन व्यवसाय एक पूर्ण व्यवसाय के रूप में उभरता जा रहा है। एक शोध के अनुसार यह व्यवसाय लगभग 25 प्रतिशत की तेजी से बढ़ रहा है। इस व्यवसाय में विकास की असीम सम्भावनाएं भी हैं। मुर्गी पालन भूमिहीन सीमान्त व बेरोजगार नौजवानों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने का एक प्रभावी व्यवसाय



है। पशुपालकों को अपनी पशुधन सम्पदा का वर्षभर विशेष ध्यान रखना चाहिए, परन्तु वर्षा ऋतु या मानसून के दौरान उनकी जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि मौसम के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पादन में कमी हो जाती है, जिससे पशुपालकों को काफी हानि होती है। इससे बचने के लिए मुर्गीपालक भाई कुछ प्रबंधन जैसे गृह, खाद्य व जल इत्यादि के तरीकों को अपनाकर इस नुकसान से बच सकते हैं। मानसून या वर्षा ऋतु के दौरान वातावरण के तापमान में गिरावट हो जाती है। तापमान में परिवर्तन से मुर्गियों अथवा चूजों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। तापमान में परिवर्तन से चूजों में मृत्यु दर 30-40 प्रतिशत तक बढ़ जाती है व अंडा उत्पादन में भी कमी आ जाती है तथा कुक्कुट शाला में नमी भी बढ़ जाती है। नमी बढ़ने के कारण मुर्गियों में श्वास सम्बन्धित रोग जैसे एस्पिरिलोसिस, कॉक्सिडियोसिस न्यूमोनिया तथा कई परजीवी रोगों की संभावनाएं बढ़ जाती है। मुर्गियों के बाड़े में मरम्मत मानसून से पहले ही कर देनी चाहिए तथा बाड़े में किसी प्रकार का जल भराव भी नहीं होना चाहिए। नमी को कम करने के लिए बाड़े में वेटीलेटर या एक्जोस्ट पंखे लगा देने चाहिए, बाड़े के फर्श की नियमित सफाई करनी चाहिए तथा फर्श पर चुने का छिड़काव भी करना चाहिए ताकि नमी ना रहें। वर्षा या मानसून में मुर्गियों के खाद्य पदार्थ उचित मात्रा में संग्रह करके रख देना चाहिए। खाद्य पदार्थों की बोखियों को जमीन से एक फीट की ऊंचाई पर रखना चाहिए, ताकि खाद्य पदार्थ में किसी प्रकार की नमी न आये तथा मुर्गियों को फफुंद लगा हुआ फीड नहीं खिलाना चाहिए। मानसून के मौसम में मुर्गियों के लिए स्वच्छ जल का प्रबंधन भी अत्यंत आवश्यक है दूषित पानी मुर्गियों को न पिलायें तथा खाने व पीने के पानी के बर्तनों की नियमित सफाई करनी चाहिए। संग्रहित पानी को ढक कर रखें इसमें वर्षा का पानी प्रवेश ना होने दें साथ ही पानी के टैंक की नियमित साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। दूषित जल में ब्लीचिंग पाउडर मिलाकर शुद्ध भी किया जा सकता है। मुर्गियों के बाड़े के आसपास कहीं पर भी जल भराव नहीं होना चाहिए। मुर्गियों का समय पर टीकाकरण का विशेष ध्यान रखें। मानसून के तनाव को कम करने के लिए मुर्गियों को विटामिन्स व मिनरल मिक्सर की उचित खुराक देनी चाहिए तथा बीमार मुर्गियों व चूजों की तुरंत पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए ताकि मानसून में होने वाले नुकसान/हानि से बचा जा सके।

“धीणे री बात्यां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाइन
1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

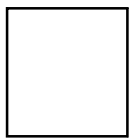
email : deerajuvass@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में



स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, विजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच